B.A - 1st Part
PAPER - 1st
* कृष्णजन्म

डॉ० राज कुमार राय
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

कृष्णजन्म महाकाव्यक मैथिली साहित्यमे अतीव महत्व अछि। प्रथम महाकाव्य होएबाक कारणें एहि ग्रंथक ऐतिहासिक महत्व सेहो अछि। एकर रचना कविवर मनबोध 18म शताब्दी में कयलनि। लोकभाषाक महत्वपूर्ण प्रवाहपूर्ण प्रयोग कए अमर छथि। एहि ग्रन्थक भाषाक सरलताक अनेक उदाहरण देखल जा सकैत अछि -

"कतो एक दिवस गेलन बिति गेल,
हरि पुनु हथगर गोरगर भेल॥
से कोन ठाम जतए नहि जाथि।
कए बेर आंगन हुँसौं हबहाथि॥"

'कृष्णजन्म' महाकाव्यक कथोपकथन एवं वर्णन-शैलीरूप हृदयकेँ स्पर्श करैत अछि। कतहु-कतहु वर्णन एतेक सजीव अछि जे ओकर चित्र आँखिक सोझां उपस्थित भए जाइत अछि।

Scanned with CamScanner

मनबोध लिखल ग्रंथमे जाहि वात्सल्य रसक श्री गणेश कयने छथि से मैथिली साहित्यमे नवीन छल। किन्तु लोकभाषामे शृंगार रस कें छोड़ि भक्ति रसके छन्द, राग-ताल सम स्वतन्त्र शैलीक रचना छल। तत्कालीन मैथिली समाजके आदर्श-जाति जकाँ बालक जन्म भेला पर ग्राम जरिके हकार देल जाइत छल, तेल सिन्दुर बाँटल जाइत छल, सोहर गाओल जाइत छल, घर आँगन मे उत्सव होइत छल। आदि मिथिलाक सांस्कृतिक एवं लोकाचारक सन्दर्भे दाहि, प्रतीक रूपमे पुराणसँ कथा लए, ई एकटा 18 सर्गमे निबद्ध कृष्ण महाकाव्यके रचना कयने छथि।

'कृष्णजन्म' सम्पूर्ण ग्रन्थ एकहि छन्द चौपाइमे रचित अछि; मुदा 10 अध्यायक बाद पंक्तिक अभाव अछि। तेँ ई सन्देह अछि जे 11 सँ 18 अध्याय धरि मनबोधक नामपर कोनो आन कविक जोड़ल अछि। किन्तु किछु लोकनि ओकरा महाकाव्य नहि मानि पौराणिक कथाकाव्य कहैत छथि। एहिमे तद्भव शब्दक प्रयोगक अतिरिक्त मिथिलाक लोकोक्ति आ मोहावराक प्रयोग प्रचुर भेल अछि। मैथिलीमे प्रायः मनबोधे सँ वात्सल्य रसक धारा आरम्भ होइत अछि।

Scanned with CamScanner

एहि महाकाव्यक कथा स्रोत पुराण अछि। मुदा मिथिलाक सांस्कृतिक के द्वारे ओकरा विस्तार कए रोचक, स्वाभाविक बनएबामे बड़ कि सिद्धहस्त छथि। श्रीमद्भागवतक दशम स्कन्धक घटनाकेँ अपन रचनाक मूल स्रोत बनौलनि। कथावस्तु एहि प्रकारेँ अछि।—

द्वापर युगमे जखन पृथ्वी दैत्य सबहिक उत्पातेँ व्याकुल भए गेलीह, तखन धुरधुर गेलीह। मुदा ओतए मनोकामना पूर्ति नहि भेलनि। ओकर बाद ब्रह्मा लग पहुँचलीह, मुदा ओतहु कल्ह इर नहि भेलनि। तत्पश्चात ब्रह्मा आदि देवक संग विष्णु भगवान लग पहुँचलीह, ओतए भगवान विष्णु आश्वासन देलनि—

"धरनी सब छिड़ु धैरज धरब
हम अवतरब भार सब हरब
मथुरा बसथि देवकि वासुदेव
तन्हिक भवन जन्म हम लेब।"

तदनुकूलहि भगवान विष्णु वसुदेवक बालक भए जन्म लेलनि। नारद ई कथा कंसके जाए कहि देलथिन्ह। तखन कंस, वासुदेव तथा देवकीकेँ कारागारमे बन्द कए देलथिन्ह। हुनक पहिल सात सन्तानकेँ मारि देलकन्हि तखन कृष्णक जन्म भेल। भादव कृष्ण पक्ष अष्टमी दिन छल।

जन्म कालमे कृष्णक हाथमे चक्र, गदा, कमल एवं संख छल। ई देखि वासुदेव आ देवकी कर जोड़ि कृष्ण भगवानकेँ कहए लगलथिन्ह जे ई रूप छोड़ि दियउ। भगवान कृष्ण लौकिक बच्चाक रूप धारण कय लेलाहि। तकर बाद वासुदेव राता राती कृष्णकेँ अपन मित्र नन्दक ओतए लए गेलथिन्ह। नारद कँसके आबि पुनः सबटा कथा कहि देलथिन्ह। ओम्हर नन्द-यशोदा कृष्ण जन्मोत्सव पौराणिक आ लौकिक नियमानुसार मनौलन्हि। कृष्ण भगवान अपन नाना विधि लीला सभ नेनहिसँ देखाबए लगलाह, एहि क्रममे पूतनाकेँ मारलाहि। शकट भंग कयल। अर्जुनक दुइ गाछकेँ उखाड़ल आदि।

जखन सात वर्षक भेलाह, नन्द हिनका हाथमे चरबाहि सौंपल। गाय चराबक लागि, ताहिठाम अनेक लीला कएलनि यथा - कालिय नागक दमन प्रलम्बक संहार, गोवर्द्धन लीला आदि। ई लीला सभ देखि कृष्णक देवत्व लोक बुझए लगलाह। नारद पुनः कंसक ओतए गेलाह। कंसके कहलथिन्ह जे ई कृष्ण अवश्य देव अंश थिकाह। अक्रूर (कंसक भाए जे कृष्णभक्त तीक्ष्ण स्वभावक छलाह) कंसके यज्ञ उत्सव हेतु कृष्णकेँ प्रार्थना कयलनि। कृष्ण तखन कंसके ओतए गेलाह।

Scanned with CamScanner

कंस मल्ल युद्धक आयोजन करौलनि कलाह। ताही
बीच कुवलयापीड़ हाथी हिनका पर हुल लौलकनि।
कृष्ण ओहि हाथीकेँ मारैत अखाड़ा पर पहुँचलाह।
जखनहिँ मल्लयुद्ध भेलनि से तँ सभ मारल गेल,
कंसहुकेँ कृष्ण मञ्चान परसँ खसाय पटकि मारल।
कंसक बध भेने उपद्रव शान्त भेल। एतबे नहि पश्चात्
कंसक परिवार को फिर बन्धुक संहार करलनि। कृष्ण जन्मक
मूल्य तथा दशम अध्याय धरि इएह अछि।

एगारहम अध्यायसँ अष्टम अध्याय धरि इतिहासक
बिन्दु धरिक आधारपर अछि। भीम ओ जरासन्धक
युद्धक वर्णन विशेष रूपेँ अछि। ओ लोकनि मारल
गेलाह तथा वासुदेव राजा बनाओल गेलाह।

संक्षेपमे हम इएह कहि सकैत छी जे
मनबोधक मैथिल संस्कृतिक अनुरूप लेखक छथि। ई प्रथम
कवि भेलाह जे विद्यापतिक सम्प्रदायकेँ छोड़ि एकटा
नव ढंगक काव्य रचना कयलनि। शृंगार रसके छोड़ि
भक्ति रसकेँ अपनौलनि एवं गीतकेँ छोड़ि
चौपाई छन्दक प्रयोग कयलनि।

समाप्त

डा० राम कुमार दास